अमृत वाणी

कर्तव्य के आगे प्रेम का बलिदान देना चाहिए।

– *अज्ञात*

संपादकीय

बोधघाट परियोजना का पुनः प्रारंभ होना स्वागतेय

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अगर एक ओर छत्तीसगढ़ राज्य के सर्वतोमुखी विकास के लिए सतत प्रयत्नशील हैं वही दूसरी ओर बस्तर की `बहुमुखी विकास के लिए भी हर संभव कोशिश में लगे हैं। यह मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती कि अब तो बस्तर की सबसे बड़ी और जटिल नक्सली समस्या जिसने बस्तर के विकास के सारे मार्ग अवरुध्द कर रखे थे केन्द्र और राज्य सरकार की महती पहल से सम्पूर्ण अंत के करीब पहुंच गया है और केन्द्र सरकार व्दारा किए गए संकल्प के अनुसार आगामी 31 मार्च 2026 तक देश को पूर्णतया नक्सलमुक्त कर लिया जायगा। अत: यह निश्चित है कि बस्तर फिर से एक शांत क्षेत्र बन जायगा और उसके सर्वतोमुखी प्रगति के व्दार भी खुल जाएगें।

वैसे तो मुख्यमंत्री साय की पहल से जैसे जैसे बस्तर में नक्सली हिंसा पर नियंत्रण होता गया वैसे वैसे सरकार की नियद नेल्लानार योजना के तहत उन सुदूर पहुंचविहीन गांवों में विकास का आलोक पहुंचाने की व्यवस्था भी कर ली गई जो दशकों से नक्सली आतंक के अंधकार में कैद थे। आज वर्षो बाद उन तक न्यूनतम बुनियादी सुविधाएं पहुंच जाना उनके लिए कितना सुखद और सुकून भरा है इसे केवल वे ही बयां कर सकते हैं।

यहीं तक नहीं, आज जब बस्तर के नक्सल समस्या मुक्त होने के करीब पहुंच गया है तो मुख्यमंत्री ने बस्तर की उन बहुप्रतीक्षित परियोजनाओं को पुनर्जीवित करने पर मंथन करना भी शुरु कर दिया जिससे बस्तर का बहुमुखी विकास जुड़ा है और जिसे दशकों पूर्व लागू किए जाने के बावजूद कई कारणों एवं दबाव की वजह से बंद कर देना पड़ा था। यही वजह है कि बस्तर के दंतेवाड़ा जिले के लिए प्रस्तावित बहुउद्देशीय बोधघाट परियोजना को फिर से शुरु किए जाने के बारे में उन्होंने पहले प्रधानमंत्री से चर्चा की और अब इस परियोजना को पुनः प्रारंभ किए जाने की घोषणा कर दी है। जैसा कि बताया गया है लगभग 49000 करोड़ रुपये की लागत से क्रियान्वित होने वाले इस परियोजना से जहां 3,78,475 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी वहीं इस परियोजना के व्दारा इन्द्रावती महानदी इंटरलिंक परियोजना के अंतर्गत करीब 125 मेगावाट बिजली का उत्पादन भी हो सकेगा।

बोधघाट परियोजना के तहत 4800 टन मछली उत्पादन का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इन सबके व्दारा जो अतिरिक्त रोजगार के अवसर उपलब्ध होगें वो अलग।

इस बहुप्रतीक्षित बहुमुखी बोधघाट परियोजना के व्दारा दंतेवाड़ा, बीजापुर और सुकमा जिलों के ग्रामीण अंचलों में स्थायी सिंचाई और ऊर्जा उत्पादन की मजबूत आधारशिला रखी जायगी जो स्वाभाविक रुप से इन जिलों के विकास को बहुत बल देगा। सिंचाई सुविधा की उपलब्धता से खरीफ और रवि फसल की भरपूर फसल ले पाने से किसानों की आर्थिक स्थिति तो मजबूत होगी ही, यहां के समग्र जनजातीय समुदाय के आर्थिक और सामाजिक उत्थान पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

अब जरुरत इस बात की होगी कि बस्तर हित में सभी राजनैतिक दलों से लेकर हर बस्तर वासी इस बहुप्रतीक्षित परियोजना के क्रियान्वयन में अपना नैतिक समर्थन दे ताकि यह योजना जल्द से जल्द क्रियान्वित हो सके तथा इसके मार्ग में किसी प्रकार की बाधा न आ पाए।

मन्दिरों में पैसे लेकर वीआईपी दर्शन बन्द हो

ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में पैसे लेकर दर्शन कराने वाले बाउंसरों की गिरफ्तारी के बाद श्रीकाशी विश्वनाथ धाम में सुगम दर्शन के नाम पर एक साथ इक्कीस लोगों की गिरफ्तारी जहां मंदिर प्रशासन की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह है, वही ईश्वर के दरबार में पांव फैला रहा भ्रष्टाचार गहन चिन्ताजनक एवं शर्मनाक हैं। कुछ ही दिनों पहले ओंकारेश्वर स्थित ममलेश्वर मंदिर में भक्तों से वीआइपी दर्शन के नाम पर अवैध वसूली करने पर प्रशासन ने एक होमगार्ड जवान और दो पंडितों पर कार्रवाई की है। देश-विदेश के भक्त अगाध श्रद्धा से अपने आराध्य का दर्शन करने आते हैं, लेकिन देश के प्रमुख मन्दिरों में सीधे दर्शन कराने के नाम पर पैसों की लूट मची है या वीआईपी संस्कृति के नाम पर त्रासद एवं भेदभावपूर्ण स्थितियां पसरी है। सवाल यह पूछा जा रहा है कि हिंदुओं के धार्मिक स्थलों और आयोजनों में क्यों भक्तों के बीच भेदभाव होता है? मन्दिरों में गरीब एवं अमीर के बीच भेदभाव की स्थितियां खुला भ्रष्टाचार ही है। पैसे लेकर एवं वीआईपी दर्शन की अवधारणा भक्ति एवं आस्था के खिलाफहै। यह एक असमानता का उदाहरण है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी आघात करती है। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर में तो त्रिस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था भी है। मंदिर का चप्पा-चप्पा सीसीटीवी कैमरे की पहुंच में है। यह मन्दिर सुरक्षा कारणों से अतिसंवेदनशील स्थल होने के बावजूद ऐसा कृत्य खेदजनक ही नहीं, आपत्तिजनक भी है। मंदिर प्रबंधन को चाहिए कि दर्शन की प्रचलित व्यवस्था को और सुगम, भ्रष्टाचार व दोषरहित बनाए ताकि व्यवस्था में कोई सेंध न लगे और जन-आस्था आहत न हो।

श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर में तो सुगम दर्शन का शुल्क भी जमा कराया जाता है पर ठगों की जमात ने शीघ्र दर्शन के नाम पर कमाई का नया रास्ता तलाश लिया। मंदिर प्रबंधन को चाहिए कि वह सुगम दर्शन व्यवस्था के नाम पर हो रही धांधली को गंभीरता से ले। फर्जी पंडा, गाइड बनकर लोगों को झांसे में लेने वाले लोग अचानक एक दिन में डेरा नहीं जमाए होंगे। यह सब काफी समय से चल रहा होगा। इस प्रकार की ठगी करने की संभावना कैसे बन जाती है, इसकी जांच होनी चाहिए। बात केवल ठाकुर बांके बिहारी मंदिर या श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की ही नहीं है, बल्कि देश के प्रमुख मन्दिरों में बढ़ती जन-आस्था की भीड़ एवं लम्बी-लम्बी लाइनों के बीच पैसे लेकर या वीआईपी दर्शन कराने की त्रासद एवं विसंगतिपूर्ण स्थितियों की हैं, जिसने न केवल देश के आम आदमी के मन को आहत किया है, बल्कि भारत के समानता के सिद्धान्त की भी धज्जियां उड़ा दी है। कुछ विशेष लोगों को मिलने वाले वीआईपी सम्मान एवं सुविधा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

बांके बिहारी मंदिर में एक बार फिर वीआईपी कल्चर का खेल सामने आया है। मंदिर की भीड़ से हटकर वीआईपी दर्शन कराने के नाम पर एक निजी सुरक्षा एजेंसी ने बाउंसर उपलब्ध कराकर पैसे कमाने का गोरखधंधा शुरू कर दिया था। एजेंसी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक और इंस्टाग्राम पर प्रचार कर यह दावा किया कि वे श्रद्धालुओं को भीड़ से बचाकर विशेष वीआईपी दर्शन कराने में मदद कर सकते हैं। यह तो घोषित गैरकानूनी व्यवस्था है, लेकिन अन्य प्रमुख मन्दिरों में भी मन्दिर से जुड़े लोग या अन्य ठग पैसे लेकर दर्शन कराते हैं। सबसे ज्यादा दुखद एवं विडम्बनापूर्ण है वीआईपी दर्शन का प्रचलन। प्रश्न है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले ही कार्यकाल के दौरान वीआईपी कल्चर को खत्म करते हुए लालबत्ती एवं ऐसी अनेक वीआईपी सुविधाओं को समाप्त कर दिया था तो मन्दिरों एवं धार्मिक आयोजनों की वीआईवी संस्कृति को क्यों नहीं समाप्त किया? क्यों मन्दिरों में वीआईपी दर्शन के लिये सरकार ने अलग से व्यवस्थाएं की। दरअसल, वीआईपी संस्कृति का दायरा बहुत व्यापक है। यह धार्मिक स्थलों तक सीमित नहीं है। लोकतंत्र से लेकर आस्था तक, कई मौकों पर कुछ खास लोगों को विशेष सुविधाएं दी जाती हैं। लोकतंत्र का मूल सिद्धांत कहता है कि सभी नागरिक समान हैं, फिर भी व्यवहार में कुछ लोग 'विशेष' बन जाते हैं, चाहे वे सड़क पर हों, सरकारी दफ्तरों में, अस्पतालों में या मंदिरों में! इसी तरह, बड़े नेताओं और अधिकारियों के लिये मन्दिरों में सीधे दर्शन कराने की व्यवस्थाएं हैं, जिससे लम्बी कतारे और लम्बे समय का इंतजार करती है। ऐसी व्यवस्था से मन्दिरों एवं धार्मिक आयोजनों में हादसें भी होते हुए देखे गये हैं। इन वीआईपी के लिए अक्सर यातायात रोक दिया जाता है, जिससे आम जनता घंटों जाम में फंसी रहती है। अस्पतालों में वीआईपी वार्ड हैं, जबकि आम मरीजों को बिस्तर भी नहीं मिल पाता। एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशनों पर वीआईपी यात्रियों को विशेष सुविधाएं मिलती हैं, जबकि आम लोग लंबी कतारों में खड़े रहते हैं। वीआईपी संस्कृति एक नासूर बन गई है। यही कारण है कि हर सरकार वीआईपी संस्कृति को खत्म करने का वादा करती है, लेकिन हकीकत में इसे बनाए रखने के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं।

वीआईपी कल्चर एवं पैसे लेकर दर्शन कराने की धांधली ने एक बार फिर से नये सिरे से बहस छेड़ दी है। सवाल उठ रहा है कि जब गुरुद्वारे में वीआईपी दर्शन नहीं, मस्जिद में वीआईपी नमाज नहीं, चर्च में वीआईपी प्रार्थना नहीं होती है तो सिर्फहिन्दू मंदिरों में कुछ प्रमुख लोगों के लिए वीआईपी या पैसे लेकर दर्शन क्यों है? क्या इस पद्धति को खत्म नहीं किया जाना चाहिए, जो हिंदुओं में दूरिया पैदा करता है? प्रसिद्ध मन्दिरों में वीआईपी पास एवं दर्शन की व्यवस्था समाप्त क्यों नहीं होती? यह व्यवस्था समाप्त होना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ही धार्मिक स्थलों पर होने वाली वीआईपी व्यवस्था को लेकर सवाल खड़े किये हैं। निश्चित ही जब किसी को वरीयता दी जाती है और प्राथमिकता दी जाती है तो उसे वीवीआईपी या वीआईपी कहते हैं। यह समानता की अवधारणा को कमतर आंकना है। वीआईपी संस्कृति एक पथभ्रष्टता है, यह एक अतिक्रमण है, यह मानवाधिकारों का हनन है। समानता के नजरिए से देखा जाए तो समाज में इसका कोई स्थान नहीं होना चाहिए, धार्मिक स्थलों एवं मन्दिरों में तो बिल्कुल भी नहीं। न्यायालय भी देश में बढ़ती वीआईपी संस्कृति को लेकर चिन्तीत है। मद्रास उच्च न्यायालय की मुदुरै पीठ ने अपनी एक सुनवाई के दौरान कहा भी है कि लोग वीआईपी संस्कृति से 'हताश' हो गए हैं, खासतौर पर मंदिरों में। इसके साथ ही अदालत ने तमिलनाडु के प्रसिद्ध मंदिरों में विशेष दर्शन के संबंध में कई दिशा निर्देश जारी किए। राजस्थान में गहलोत सरकार ने भी मन्दिरों में वीआईपी दर्शनों की परम्परा को समाप्त करने की घोषणा की थी कि मन्दिरों में बुजुर्ग ही एकमात्र वीआईपी होंगे। इस तरह की सरकारी घोषणाएं भी समस्या का कारगर उपाय न होकर कोरा दिखावा होती रही है।

ललित गर्ग

(दो लेखक के अपने विचार है)

बच्चों को कृष्णोंदु बनने से बचाना होगा

हाल ही में पश्चिम बंगाल के पंसकुरा में 7वीं क्लास में पढ़ने वाले बच्चे ने इसलिए आत्महत्या कर ली, क्योंकि उसकी मां ने सबके सामने उसको डांट दिया था। बच्चा अपने पीछे एक सुसाइड नोट छोड़ गया है, जो झकझोर देने वाला है।

अपने सुसाइड नोट में बच्चे ने लिखा था कि मां मैंने चोरी नहीं की। बच्चे के ये आखिरी शब्द दिल को झकझोर कर रख देने वाले हैं। दरअसल, स्कूल में पढ़ने वाले 13 साल के कृष्णोंदु दास पर एक मिठाई की दुकान से चिप्स के तीन पैकेट चुराने का आरोप लगा था। मिठाई की ये दुकान गोसाईबेर बाजार में एक सिविल वॉलंटियर शुभांकर दीक्षित की थी। स्थानीय लोगों का कहना है कि शुभांकर की गैरमौजूदगी में बच्चे ने दुकान से चिप्स के तीन पैकेट चुरा लिए थे।

दुकान मालिक ने बच्चे को दुकान से थोड़ी दूर चिप्स के पैकेट के साथ देखा, तो उसके पीछे दौड़ पड़ा। उससे चोरी के बारे में पूछताछ की गई। उसने दुकानदार को पांच रुपये के हिसाब से तीन चिप्स के पैकेट के 15 रुपये दे दिए। इसके बाद भी दुकानदार नहीं माना। वह पैसे लौटाने के बहाने बच्चे को वापस दुकान पर ले गया और उसको मारा-पीटा। इतना ही नहीं, दुकानदार ने बच्चे से सार्वजनिक रूप से माफी भी मंगवाई। बच्चे के साथ ये सब अभी हुआ ही था कि उसकी मां को जैसे ही इस बारे में पता चला, वह भी उसे फिर से उसी मिठाई की दुकान पर लेकर गई और सबके सामने डांटा। इस बात से 13 साल का लड़का इस कदर आहत हो गया कि घर लौटते ही उसने कीटनाशक पीकर आत्महत्या करने की कोशिश की। गंभीर हालत में उसे तुरंत तामलुक मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि बच्चे के कमरे से एक सुसाइड नोट बरामद किया गया है। इसमें कृष्णोंदु ने आत्महत्या करने से पहले अपनी नोटबुक में लिखा है कि मां मैंने कुरकुरे नहीं चुराए। मुझे वो सड़क पर पड़े मिले थे। मैंने चोरी नहीं की है। पीड़ित परिवार का आरोप है कि मिठाई दुकानदार के बर्ताव की वजह से बच्चा ऐसा खौफनाक कदम उठाने को मजबूर हो गया। तब से दुकान मालिक फरार है। परिवार इस बात को भी मान रहा है कि मां के सार्वजनिक रूप से डांटे जाने का भी बच्चे के मन पर गहरा असर हुआ। मां की डांट से बच्चा बहुत दुखी था। यह डांट उसके मन में घर कर गई। वह इस तरह के व्यवहार को सहन नहीं कर सका। असल में यह घटना उन मां-बाप के लिए किसी सबक से कम नहीं है, जो बात-बात पर सबके सामने अपने बच्चों को बुरी तरह डांट देते हैं, क्योंकि उम्र के इस पड़ाव में बच्चे बहुत ही कोमल और संवेदनशील होते हैं। वह हर बात को अपनी बेइज्जती से जोड़ लेते हैं। कई बार वह ऐसा कदम उठा लेते हैं, जिसके बाद पछताने के अलावा कोई और रास्ता परिवार के पास भी नहीं होता, इसलिए माता-पिता को बच्चों के साथ पेश आने में बहुत ही सतर्कता बरतनी चाहिए। किसी भी बात पर उनको समझाएं, न कि सबके सामने उन्हें डांटें। अगर डांटना बहुत जरूरी है, तो अकेले में ही डांटें। सबके सामने ऐसा करने से बचें, ताकि उनको बेइज्जती महसूस न हो। चाइल्ड एक्सपर्ट का कहना है कि आज के दौर में बच्चों की परवरिश करना बिल्कुल भी आसान नहीं है। उन्हें अच्छे या बुरे की अहमियत समझाना बहुत जरूरी है, लेकिन प्यार और अपनेपन के साथ। हर बात पर उन्हें डांटना या पीटना ठीक नहीं है। कुछ एक्सपर्ट कहते हैं कि माता-पिता बच्चों को नहीं डांटें तो वे मनमानी करते हैं और अगर डांटें तो बच्चे दिल पर ले लेते हैं। ऐसे में बड़ा सवाल ये है कि मां-बाप बच्चों को कैसे समझाएं, क्योंकि बच्चों का मन बहुत ही कोमल होता है। छोटी-छोटी बातों का उनके मन पर गहरा असर होता है। अगर सबके सामने उनको डांट दिया जाए, तो वे इसे अपनी बेइज्जती समझ लेते हैं। आहत होकर कई बार वह गलत कदम उठा लेते हैं।

असल में परिवार को अब इस बात को समझना होगा कि बदलते माहौल में बच्चों की परवरिश यदि उसके अनुसार न हो, तो उसके परिणाम गंभीर होते हैं।

अमित बैजनाथ गर्ग

(दो लेखक के अपने विचार है)

दीदी ममता के राह में कांटे

पश्चिम बंगाल में अगले साल विधानसभा चुनाव हैं। भारतीय जनता पार्टी ने युद्ध स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोलकाता से सीधे ममता बनर्जी को निशाने पर लेकर जबरदस्त अभियान की रूपरेखा खींच दी है।

इससे संकेत मिलता है कि चुनाव तक आरोपों की धार पिछले चुनाव से भी तीखी हो जाने वाली है। ममता पर राज्य को घुसपैठ, भ्रष्टाचार, स्त्रियों और हिन्दुओं पर अत्याचार और दुराचार का केंद्र बना देने का आरोप लगाकर गृह मंत्री अमित शाह ने विजय संकल्प कार्यकर्ता सम्मेलन में कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाया।

उन्होंने सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पर राज्य में भ्रष्टाचार, हिंसा और घुसपैठ को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उनके अनुसार दशकों तक हर क्षेत्र में देश का नेतृत्व करने वाले बंगाल में ममता दीदी ने आकर इस भूमि को घुसपैठ, भ्रष्टाचार, अपराध और हिन्दुओं पर अत्याचार का केंद्र बना दिया।

शाह ने कार्यकर्ताओं को जोश दिलाते हुए याद दिलाया कि यह वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की भूमि है। ज्ञान, धर्म, स्वतंत्रता संग्राम समेत हर क्षेत्र में देश का नेतृत्व करने वाले बंगाल में 'मां, माटी, मानुष' का नारा देकर सत्ता में आने वाली ममता बनर्जी ने बंग भूमि को अपराध, बम धमाकों और हिन्दुओं पर अत्याचार का केंद्र बनाकर रख दिया है। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान और तृणमूल कांग्रेस के चुनाव जीतने के बाद भाजपा के अनेक कार्यकर्ताओं की हत्या की गई। बंगाल में हिंसा आज भी जारी है। दीदी आपका समय पूरा हो गया है और 2026 में पश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार बनने जा रही है।

वर्ग पहेली 5764

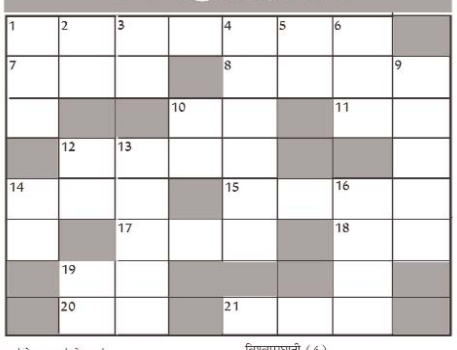

संकेतः बाएं से दाएं

1. ये भारतीय सिनेमा के प्रसिद्ध तथा प्रतिभाशाली अभिनेता है जिनका 20 जुलाई 1950 को जन्म दिन है (7)
7. स्वभाव, प्रकृति, जीवन चरित (3)
8. पाठशाला, विद्यालय (4)
10. आला, घात प्रतीक्षा, भांप (2)
11. नजीता, परिणाम (2)
12. रास्ते से भटका हुआ, जो मार्ग भूल गया हो, मार्गभ्रष्ट (4)
14. लेखनी, कर्णिका, हस्तलेख (3)
15. राहनुमा, पथ प्रदर्शक (4)
17. शिक्षा देने की क्रिया या भाव, पढ़ाई, दीक्षा, तालकीन (3)
18. पथ, मार्ग, रास्ता, डगर (2)
19. दो की संख्या, निग्रह, एक कर्मसाक्षी देवता (2)
20. कुपोषण, एक प्रकार का रोग, नाश (2)
21. पश्चिमी अफ्रिका के उभार के तट पर स्थित देश सेनेगल की यह राजधानी है, उदान वायु (3)

ऊपर से नीचे

1. प्रारब्ध, किस्मत, भाग्य (3)
2. खुदकाश्त कृषि, हल (2)
3. ऋतु का अपभ्रंश (2)
4. उपकार न मानने वाला, कृतघ्न, निष्ठाहीन, विश्वासघाती (6)
5. प्रसन्न, हर्षित, खुश, आनंदित (3)
6. अक्षर, वर्ण (3)
9. जन्मदिन, वर्षगांठ, जन्मदिवस (5)
10. बृहस्पति की पत्नी, नक्षत्र, सुषेण की कन्या और बाली की पत्नी का नाम (2)
12. फूल, कुसुम, प्यास की तीव्रता, आंख की फूली (2)
13. ममतापूर्ण, स्वजन भावनापूर्ण, अपनत्व (5)
14. फन, हुनर (2)
16. समकक्ष, जय पराजयहीन, समाकार, समान अंशीय (4)
19. एक देवता जो कुबेर के सेवक और उसकी निधि के रक्षक कहे गए है (2)

वर्ग पहेली 5763 का हल

में	ग	ल	पां	डे			ड
ग	ल	त		बु	डा	पे	स्ट
ला			बे	क	ल		र
च		ग्र	रू		ना	टा	
र	वा		त	क्ष		ल	क्ष
ण		पा		मा	लू	म	
	ज्ञ		का	शी		टो	टा
नी	ल	क	म	ल		ल	ट

सुडोकू पहेली — क्रमांक- 5764

	4			1				9
	7			6		1		
1	6	3	9					8
	3					2		
	5		7		2		1	
		6					3	
6					5	8	9	2
		5		2			6	
9				8			4	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5763

6	9	5	4	7	3	2	1	8
7	3	4	8	2	1	5	6	9
2	8	1	6	9	5	7	3	4
8	1	2	5	3	9	4	7	6
4	6	7	2	1	8	9	5	3
3	5	9	7	6	4	8	2	1
1	7	3	9	4	2	6	8	5
9	2	8	1	5	6	3	4	7
5	4	6	3	8	7	1	9	2